

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-६१

गजेन्द्र ठाकुर आ विदेह

६१

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-६१

गजेन्द्र ठाकुर आ विदेह : बालसाहित्य, समानान्तर इतिहास-दर्शन
आ स्त्री-साहित्य

आशीष अनचिन्हार | विदेह • २०२६

स्रोताधारित साहित्यिक आ भाषिक अध्ययन

प्रकाशन-विवरण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड ६१। सम्पादक: आशीष अनचिन्हार।

प्रथम प्रकाशन: २०२६। भाषा: मैथिली। मुद्रित आकार: ६ × ९ इन्च। © २०२६

Gajendra Thakur / Preeti Thakur।

एहि खण्डमे गजेन्द्र ठाकुर आ विदेहसँ सम्बन्धित बालसाहित्य, समानान्तर इतिहास-दर्शन, साहित्यिक अभिलेख आ स्त्री-साहित्यिक अध्ययन अछि।

मूल ग्रन्थक लेखकीय कथनकेँ आलोचनाक निष्कर्ष बुझि नहि छापल गेल अछि। उद्धरण, उदाहरण, क्षेत्रीय रूप, वर्तनी-विकल्प आ मूल लेखकीय शैलीक प्रमाण-स्थिति सुरक्षित राखल गेल अछि।

सम्पादकीय भूमिका : पाठ, प्रमाण आ समीक्षा

बालक, स्त्री आ नव पाठकक साहित्यिक सहभागिताक संग इतिहास, दर्शन आ अभिलेखीय परम्पराक सम्बन्ध विवेचित अछि।

मूल ग्रन्थक अध्याय-विन्यासक संग पाठ-सन्दर्भ आ आलोचनात्मक विवेचन प्रस्तुत अछि।

विस्तृत अनुक्रम : खण्ड ६१

एहि अनुक्रममे मूल ग्रन्थक विभाग आ विषयसभ अपन क्रममे प्रस्तुत अछि।

- १. एक मंच, अनेक साहित्यिक समाज
- २. ३७ बाल उपन्यास आ नव पाठक
- ३. शिशु उत्सव आ चित्रित साहित्य
- ४. स्त्री-कोणा : लेखकत्वक बहुस्वर
- ५. समानान्तर इतिहास : अपूर्ण अभिलेखक पुनर्पाठ
- ६. मिथिला-वज्जी-अंग : क्षेत्रीय सम्बन्ध
- ७. समानान्तर दर्शन आ शास्त्रार्थ
- ८. अनुवादक कर्तव्य आ श्रेय

- ९. अभिलेख आ लोकस्मृति
- १०. सम्पादकीय समापन : समवेत अस्तित्व
- सार्वजनिक स्रोतक साङ्गोपाङ्ग प्रवेश-पञ्जी आ डिजिटल अनुसन्धानक प्रमाण-सीमा

प्रथम भाग — विषयवार विस्तृत समालोचना

१. एक मंच, अनेक साहित्यिक समाज

गजेन्द्र ठाकुरक रचना-संसार आ विदेहक पत्रिका-अभिलेख बीच सम्बन्ध लेखकक व्यक्तिगत पुस्तक-सूची सँ आगाँ जाइत अछि। संस्थागत प्रकाशन, अनेक लेखकक आवाज, अनुवाद, आलोचना आ डिजिटल संरक्षणक संग साहित्यक एक बहुकेन्द्रीय समुदाय उभरैत अछि। एहि खण्डमे “गजेन्द्र ठाकुर” आ “विदेह”क श्रेय अलग-अलग सत्यापित होएब आवश्यक अछि। लेखकक मौलिक कृति, अन्य लेखकक सम्पादित रचना आ पत्रिकामे प्रकाशित योगदानकें एकहि व्यक्ति पर आरोपित नहि कएल जाए।

भाषिक रूप सामाजिक पदानुक्रम, उमेर, लिङ्ग, क्षेत्र आ परिस्थितिक बोधसँ बदलि सकैत अछि। एहि कारण पाठ-निर्णयमे स्रोतक काल, विधा, संस्करण आ लक्ष्यपाठककें क्रमसँ राखल गेल अछि।

अध्ययनमे वक्ताक सहमति, प्रतिनिवेदन आ क्षेत्रीय विकल्पक सम्मान अनिवार्य अछि। शोध-पद्धतिमे जे उदाहरण प्रकाशित ग्रन्थ अथवा सत्यापित वेबसाइटसँ निबद्ध नहि अछि, ओकरा स्वतन्त्र प्रमाणक दर्जा नहि देल जाए।

अन्तरसम्बन्धक दृष्टिसँ एहि प्रकरणक पाठकें एकरे लगक खण्डसभ, मूल पोथीक अनुक्रम आ विदेहक अभिलेखीय परम्परासँ जोड़िकऽ पढ़ब उपयोगी अछि। एहन पठनसँ भाषा, साहित्य, इतिहास, पहुँच आ सम्पादनक प्रश्न परस्पर सम्वादमे अबैत अछि, मुदा अलग स्रोतक भेद नहि भेटैत।

२.३७ बाल उपन्यास आ नव पाठक

समग्र सूचीमे ३७ टा मैथिली बाल उपन्यासक संयुक्त संस्करणक प्रमाण उपलब्ध अछि। बाल साहित्यक मूल्य केवल बालक लेल सरल भाषा नहि; निर्णय, जिज्ञासा, भय, मित्रता आ लोकजीवनकें बालकक दृष्टिसँ देखबाक कला अछि। बाल संस्करण आ किशोर संस्करणक भाषा, गति आ नैतिक प्रश्न अलग हो सकैत अछि। एउ तरंगक समीक्षा करैत समय पाठकीय आयु, दृश्य-विन्यास आ प्रश्न उठेबाक अधिकारकें स्वतंत्र मानक मानल जाए।

एहि कारण पाठ-निर्णयमे स्रोतक काल, विधा, संस्करण आ लक्ष्यपाठककेँ क्रमसँ राखल गेल अछि।

शोध-पद्धतिमे जे उदाहरण प्रकाशित ग्रन्थ अथवा सत्यापित वेबसाइटसँ निबद्ध नहि अछि, ओकरा स्वतन्त्र प्रमाणक दर्जा नहि देल जाए।

३. शिशु उत्सव आ चित्रित साहित्य

विदेह शिशु उत्सव बालकक कथापाठ, चित्र-आख्यान, खेल आ प्रश्नोत्तरकेँ साहित्यिक परिधिक भीतर स्थान दैत अछि। एतय मौखिक कथा, रंगमञ्च आ पुस्तकक भेट होएब पाठकीय संस्कृतिक विस्तार अछि। बाल सामग्रीक सूत्र-उद्धरण सत्यापित कएल जाए; चित्रकार आ अनुवादकक श्रेय सेहो स्पष्ट रहय। नैतिकता केवल अन्तमे एकटा उपदेश नहि, कथा-क्रियाक भीतर पात्रक निर्णयसँ पढल जाए। पाठ-साक्ष्यक प्रश्न : एहि प्रसंगमे मूल प्रकाशनक शीर्षक, लिखित उदाहरण, क्षेत्र/विधा आ सम्पादकीय निर्णयक परिधि एक संग जाँचल जाए। उद्धरणक मूल अक्षररूपकेँ सुधारक नामपर नहि बदलब एहि समीक्षाक आवश्यक नीति अछि।

४. स्त्री-कोणा : लेखकत्वक बहुस्वर

विदेहक स्त्री-कोणा अलग पाठकीय सार्वजनिक स्थान बनबैत अछि, जतय कविता, गद्य, आलोचना आ अभिलेखित आवाज एकत्र होइत अछि। स्त्री साहित्यक अध्ययनमे केवल विषयवस्तु “स्त्री” होएब पर्याप्त नहि; कृति लिखनिहारक अनुभव, साहित्यिक अधिकार आ पाठकक प्रतिक्रिया महत्वपूर्ण अछि। एहि सामग्रीकेँ प्रदर्शनात्मक विविधताक उदाहरण मात्र नहि बनायल जाए। प्रत्येक लेखकक पुस्तक, विधा, मूल अंक आ पाठगत सन्दर्भ देलासँ वास्तविक साहित्यिक योगदान देखाएत।

५. समानान्तर इतिहास : अपूर्ण अभिलेखक पुनर्पाठ

A Parallel History of Mithila & Maithili Literature चारि tome आ १०० volumeक शृंखला रूपेँ समग्र पृष्ठमे चिन्हित अछि। “समानान्तर” एतय परम्परागत इतिहासक मौन आ बाहर छूटल स्रोतक प्रश्न उठेबाक सम्भावना प्रदान करैत अछि। इतिहासक आलोचनामे कथा-जैसी सहजता पर्याप्त नहि।

दस्तावेजक तिथि, प्रकाशन, मतभेद, स्रोतक मौन आ पाठकीय पुनर्परीक्षणक अधिकार संरक्षित रखबाक आवश्यकता अछि।

ऐतिहासिक पुनर्निर्माणकें केवल समान ध्वनिक आधारपर वंशानुक्रमक दावा नहि बनाओल जा सकैत अछि। एहि कारण पाठ-निर्णयमे स्रोतक काल, विधा, संस्करण आ लक्ष्यपाठककें क्रमसँ राखल गेल अछि।

काल-साक्ष्य, पाठ-तिथि, वैकल्पिक सम्पर्क-व्याख्या आ स्रोतगत अनिश्चितता स्पष्ट राखू। शोध-पद्धतिमे जे उदाहरण प्रकाशित ग्रन्थ अथवा सत्यापित वेबसाइटसँ निबद्ध नहि अछि, ओकरा स्वतन्त्र प्रमाणक दर्जा नहि देल जाए।

६. मिथिला-वज्जी-अंग : क्षेत्रीय सम्बन्ध

मिथिला, वज्जी आ अंगक इतिहासकें भारत-नेपालक सामाजिक, आर्थिक आ सांस्कृतिक सन्दर्भमे देखबाक अनुसंधान मार्ग समग्रमे उपस्थित अछि। भौगोलिक क्षेत्रक साझा स्मृति आ ऐतिहासिक इकाइ एकरे समान वस्तु नहि; कालानुसार सीमा आ सम्बन्ध बदलि सकैत अछि। तीन क्षेत्रक इतिहास लिखैत समय भाषिक आत्मपहिचान, पुरातात्विक प्रमाण, शिलालेख, साहित्यिक आख्यान आ आधुनिक राजनीतिक व्याख्याक स्रोत अलग श्रेणीमे रखबाक चाही। पाठ-साक्ष्यक प्रश्न : एहि प्रसंगमे मूल प्रकाशनक शीर्षक, लिखित उदाहरण, क्षेत्र/विधा आ सम्पादकीय निर्णयक परिधि एक संग जाँचल जाए। उद्धरणक मूल अक्षररूपकें सुधारक नामपर नहि बदलब एहि समीक्षाक आवश्यक नीति अछि।

७. समानान्तर दर्शन आ शास्त्रार्थ

गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शनक दूनू खण्ड आ भामती, आत्मतत्त्वविवेक, न्यायकुसुमाञ्जलि, तत्त्वचिन्तामणि सन ग्रन्थक मैथिली-अङ्ग्रेजी पाठ-रूप समग्रमे सूचीबद्ध अछि। ई प्रयास विचारक शब्दावलीकें नूतन पाठक समुदायसँ जोड़ैत अछि। दार्शनिक पदक अनुवादमे अर्थक सटीकता, तर्क-क्रम, स्रोत-पाठक भिन्न पाठ आ टीकाक सम्बन्ध समीक्षा माँगैत अछि। भाषायी सुगमता लेल मूल दार्शनिक विरोधकें छोट कऽ देब उचित नहि।

तुलनात्मक प्रतिपादनमे समानता आ भिन्नताक दूनू पक्ष व्यवस्थित प्रमाणसहित राखल जाए। एहि कारण पाठ-निर्णयमे स्रोतक काल, विधा, संस्करण आ लक्ष्यपाठककें क्रमसँ राखल गेल अछि।

प्रमाण-प्राप्त क्षेत्र आ अप्राप्त क्षेत्रक सीमा स्पष्ट करब वैज्ञानिक निष्ठाक आधार अछि। शोध-पद्धतिमे जे उदाहरण प्रकाशित ग्रन्थ अथवा सत्यापित वेबसाइटसँ निबद्ध नहि अछि, ओकरा स्वतन्त्र प्रमाणक दर्जा नहि देल जाए।

८. अनुवादक कर्तव्य आ श्रेय

अनुवाद विभिन्न भाषिक समुदायक साहित्यिक स्मृतिक बीच पुल अछि, मुदा पुलक दूनू छोरक स्वतंत्रता मानब आवश्यक अछि। मूल लेखक, मूल भाषा, मध्यस्थ अनुवाद, अनुवादक आ संपादकक नामक स्पष्टता नैतिक आधार अछि। समान नामक अनेक संस्करणक पाठ तुलना कऽ अर्थभेद देखल जाए। उपलब्ध इलेक्ट्रॉनिक संस्करण मात्रसँ पूर्ण अनुवाद-संगति सिद्ध नहि होइत; प्रतिनिधि अनुच्छेदक दोहरी-पाठ जाँच उपयोगी होएत।

शब्द-प्रतिशब्द समानता अनुवादक पर्याप्त कसौटी नहि; अर्थ, विधा, लक्षित पाठक आ सांस्कृतिक संकेत साथ रहैत अछि। एहि कारण पाठ-निर्णयमे स्रोतक काल, विधा, संस्करण आ लक्ष्यपाठककें क्रमसँ राखल गेल अछि।

स्रोत आ लक्ष्यपाठक समानान्तर खण्डसँ अर्थ-हानि, अनावश्यक विस्तार आ शैली-विचलन चिन्हब जरूरी अछि। शोध-पद्धतिमे जे उदाहरण प्रकाशित ग्रन्थ अथवा सत्यापित वेबसाइटसँ निबद्ध नहि अछि, ओकरा स्वतन्त्र प्रमाणक दर्जा नहि देल जाए।

९. अभिलेख आ लोकस्मृति

विदेह आ सदेहक अंकानुक्रम, मुद्रित पुस्तक, डिजिटल कडी, श्रव्य संसाधन आ खोज-सूची साहित्यक जीवित अभिलेख प्रस्तुत करैत अछि। अलग समयक प्रकाशन अलग संपादनक इतिहास रखैत अछि; एकीकृत सूचीमे एकर निशान बाँचि रहल चाही। किसी पाठक पहुँचयोग्य लिंक मृत हो जाए तँ अभिलेखक मूल्य कमि जाइत अछि। स्थायी अभिज्ञापक, संग्रहक प्रति, स्रोत URL आ पुनरीक्षण तिथि भविष्यमुखी संरक्षणक व्यवहारिक माध्यम अछि। पाठ-साक्ष्यक प्रश्न : एहि प्रसंगमे मूल प्रकाशनक शीर्षक, लिखित उदाहरण, क्षेत्र/विधा आ सम्पादकीय निर्णयक परिधि एक संग जाँचल जाए। उद्धरणक मूल अक्षररूपकें सुधारक नामपर नहि बदलब एहि समीक्षाक आवश्यक नीति अछि।

१०. सम्पादकीय समापन : समवेत अस्तित्व

बाल साहित्य, स्त्री साहित्य, इतिहास आ दर्शनक एकहि खण्डमे सहभागिता विषयक विविधताक प्रमाण अछि। ई विविधता सरलीकृत “एक स्वर” बनि जाए तँ व्यक्तित्व, कृति आ वाद-विवादक भिन्नता छिपि जाएत। एहि खण्डक निर्णायक मूल्य सूचीक विस्तार नहि, प्रमाणित कृति-श्रेय, मूल पाठक सम्मान आ भिन्न समुदायसँ उत्तरदायी सम्पादकीय संवाद अछि।

द्वितीय भाग — सार्वजनिक अभिलेखक विषयवार पूर्ण आवरण-पञ्जी

१. विदेह शिशु उत्सव

सार्वजनिक स्रोत/प्रवेश —

<https://videha-ejournal.github.io/videha/index.htm>

सम्पादकीय टिप्पणी — डिजिटल उत्सवक पृष्ठमे संग्रह-सूची आ वास्तवमे आयोजित कार्यक्रमक तिथि/वक्ता अलग श्रेणीमे राखू; कार्यक्रम-पोर्टलकें अघोषित मंचनक साक्ष्य नहि बनाओल जाए।

२.३७ बाल उपन्यासक समेकित शृङ्खला

सार्वजनिक स्रोत/प्रवेश — <https://videha-ejournal.github.io/videha-literature-festival/en/>

३. स्त्री कोना / Women's Corner

सार्वजनिक स्रोत/प्रवेश —

<https://videha-ejournal.github.io/videha/index.htm>

४. Parallel History — चारि Tome / १०० खण्ड

सार्वजनिक स्रोत/प्रवेश — <https://videha-ejournal.github.io/videha-literature-festival/en/>

५. इतिहास : मिथिला-वज्जी-अंग

सार्वजनिक स्रोत/प्रवेश — <https://videha-ejournal.github.io/videha-literature-festival/en/>

सम्पादकीय टिप्पणी — ऐतिहासिक अथवा पञ्जीगत दावामे दस्तावेजक तिथि, प्रतिलिपिक स्रोत, व्यक्तिक पहिचान, विरोधी प्रमाण आ अभिलेखीय उपलब्धताक सीमा अलग दर्ज करू।

६. Parallel Philosophy

सार्वजनिक स्रोत/प्रवेश — <https://videha-ejournal.github.io/videha-literature-festival/en/>

७. पञ्जीक छह ग्रन्थ

सार्वजनिक स्रोत/प्रवेश — <https://videha-ejournal.github.io/videha-literature-festival/en/>

सम्पादकीय टिप्पणी — ऐतिहासिक अथवा पञ्जीगत दावामे दस्तावेजक तिथि, प्रतिलिपिक स्रोत, व्यक्तिक पहिचान, विरोधी प्रमाण आ अभिलेखीय उपलब्धताक सीमा अलग दर्ज करू।

८. मैथिली अनुवाद आ संस्कृत-रचना

सार्वजनिक स्रोत/प्रवेश — <https://videha-ejournal.github.io/videha-literature-festival/en/>

सम्पादकीय टिप्पणी — अनुवादक अर्थ-परिवर्तन आ लिप्यन्तरणक अक्षर-मानचित्रणमे भेद सुस्पष्ट राखू; स्वतः फलादेशकें मानवीय प्रूफ-पठनक बिना प्रमाणित अनुवाद नहि मानू।

९. सदेह आ विदेह मूलांक-अभिलेख

सार्वजनिक स्रोत/प्रवेश —

<https://videha-ejournal.github.io/videha/videha.htm>

१०. समालोचना-पठनक विशेष कक्ष

सार्वजनिक स्रोत/प्रवेश — <https://videha-ejournal.github.io/videha-literature-festival/en/>

तेसर भाग — पहुँच, भाषा, शोध आ उपयोगकर्ता-अधिकार

बाल साहित्यक आन्तरिक वर्गीकरणमे आयु, कथन-स्वर, चित्रक अर्थवाही भूमिका, कठिन शब्दक घनत्व आ बालकक निर्णयक अधिकारक स्वतंत्र समीक्षा आवश्यक अछि।

स्त्री साहित्यक अभिलेखीय प्रस्तुति केवल लेखिकाक नामसूची नहि; रचनाकारक स्वतन्त्र विचार, संस्था, पाठ-प्रसार, श्रेय आ प्रतिरोधक इतिहास सेहो अछि।

समानान्तर इतिहास-दर्शनक विस्तृत पुस्तक-शृङ्खलामे मूल स्रोत, अनुपलब्ध कड़ी, अनुवाद-श्रेय आ व्याख्याक भिन्न स्तर एकहि अनुक्रममे स्पष्ट रहय।

सन्दर्भ-सूची

प्राथमिक सार्वजनिक अभिलेख — Videha main archive, indexed mirror, Gajendra Thakur catalogue and Videha Literature Festival; स्रोतक सटीक प्रवेश लिंक ऊपर विषय-पञ्जीमे देल अछि।

main — <https://videha-ejournal.github.io/videha/index.htm>

archive — <https://videha-ejournal.github.io/videha/videha.htm>

books — <https://videha-ejournal.github.io/videha/gajenthakur.htm>

festival —

<https://videha-ejournal.github.io/videha-literature-festival/index.html>

festival_en —

<https://videha-ejournal.github.io/videha-literature-festival/en/>

samagra — <https://www.videha.co.in/gajendra-thakur-samagra.htm>

elearn — <https://www.videha.co.in/videha-elearning.htm>

audiovideo — https://www.videha.co.in/Audio_Video.htm

converter — <https://www.videha.co.in/script-converter.html>

translit — https://www.videha.co.in/new_page_101.htm

braille — <https://videhabraille.wordpress.com/>

githubfestival — <https://github.com/videha-ejournal/videha-literature-festival>

समापन — बालसाहित्य, स्त्री-साहित्य, इतिहास, दर्शन आ साहित्यिक
अभिलेखकै एक संग पढलासँ विदेहक रचनात्मक आ शोधपरम्पराक अनेक स्तर
उद्घाटित होइत अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-६१

बाल-किशोर साहित्य, विदेहक स्त्री-कोणा, ऐतिहासिक ग्रन्थशृंखला, दर्शन-अनुवाद,
डिजिटल अभिलेख आ सांस्कृतिक उत्तरदायित्वक आलोचनात्मक संयुक्त अध्ययन।

मूल पाठ □ विस्तृत आलोचना □ सम्पादकीय चयन



विदेह



विदेह डिजिटल संग्रह

